स्नातक हिन्दी (प्रतिष्ठा) तृतीय खण्ड
(अष्टम पत्र - साहित्य सिद्धांत एवं हिन्दी आलोचना)

- डॉ० मुन्ना साह
हिन्दी विभाग
जे० के० कॉलेज, बिरौल

भारतीय साहित्य सिद्धांत - अलंकार

अलंकार का सामान्य अर्थ 'आभूषण' है। अलंकार संप्रदाय के संस्थापक आचार्य 'भामह' हैं। इनका समय 7वीं सदी माना जाता है। इन्होंने सर्वप्रथम अलंकार को काव्य की आत्मा घोषित किया। इनका कथन है - "वक्रोभिधेय शब्दोक्तिरिष्टावाचऽलंकृतिः"

अर्थात् शब्द और अर्थ का वैचित्र्य ही अलंकार है। उनका मत है कि स्वभावतः सुन्दर होने पर भी स्त्री के मुख पर आभूषण के बिना जिस प्रकार आभा नहीं आती उसी प्रकार नितांत प्राकृतिक रूप से होने पर वाणी में चारुता नहीं आती।

दण्डी ने अलंकारों को काव्य-शोभा का विधायक धर्म माना है। 'काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते'

काव्य में शब्द और अर्थ का सहभाव होता है। इसलिए अलंकार शब्द और अर्थ दोनों की शोभा वृद्धि करते हैं।

केशवदास ने अलंकार के सम्बन्ध में कहा है, कि -

"जदपि जुजाति सुलक्षणी, सुबरन सरस सुवृत्त।
भूषण बिनु न बिराजई, कविता, बनिता, मित्त॥"

अर्थात् श्रेष्ठ गुणी होने पर भी कविता और स्त्री आलंकारों के बिना शोभा नहीं देती।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अलंकारों की मीमांसा करते हुए लिखा है - "वस्तु या व्यापार की भावना चटकीली करने और भाव को अधिक उत्कर्ष पर पहुँचाने के लिए कभी-कभी वस्तु का आधार या गुण बहुत बढ़ाकर दिखाना पड़ता है, कभी उसके रूप-रंग या गुण की भावना को उस प्रकार के और रूप-रंग मिलाकर तीव्र करने के लिए समान रूप और धर्म वाली वस्तुओं को सामने करना पड़ता है। इस तरह के भिन्न-भिन्न विधान और कथन के ढंग अलंकार कहलाते हैं।" इसी प्रकार सुमित्रानंदन पंत ने कहा है - 'अलंकार केवल वाणी की सजावट के लिए नहीं। वे भाव की अभिव्यक्ति के विशेष द्वार हैं।"

Scanned with CamScanner

अलंकारों की संख्या के सम्बन्ध में अलंकारवादी आचार्यों में मतभेद है। प्रारंभ में भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में केवल उपमा, रूपक, दीपक और यमक इन चार अलंकारों का ही वर्णन किया था। भामह के ग्रंथ 'काव्यालंकार' में 48 अलंकारों का उल्लेख है। रुद्रट ने अपने 'अलंकार सारसंग्रह' में अलंकारों का भेद-प्रभेदों का वर्णन करते हुए इनकी संख्या 78 बताई है। जयदेव के चन्द्रलोक में 100 अलंकारों का वर्णन किया है। पंडितराज जगन्नाथ के 'रसगंगाधर' में 191 अलंकारों का विवेचन हुआ है। इसी क्रम में आचार्य 'केशवदास' जो रीतिकाल के प्रमुख कवि हैं - 'कविप्रिया' में 37 अलंकारों का भेद सहित वर्णन किया है। चिंतामणि त्रिपाठी ने भी संख्या अधिक बताई है। लाला भगवानदीन ने 'अलंकार मंजूषा' में अलंकारों की संख्या 120 तक बतायी है।

इन सभी आचार्यों द्वारा निर्धारित अलंकार भेदों-प्रभेदों को मुख्यतः तीन अलंकार भेदों के अन्तर्गत रखा गया है - (1) शब्दालंकार (2) अर्थालंकार (3) उभयालंकार।

जहाँ अलंकार का चमत्कार पूर्ण रूप से 'शब्द' के प्रयोग पर निर्भर होता है, वहाँ शब्दालंकार माना जाता है। शब्दालंकार में शब्द-विशेष को बदलकर उसका पर्याय रख देने पर अलंकार का चमत्कार और सौन्दर्य परिवर्तित हो जाता है। वहीं अर्थालंकार में काव्य का सौंदर्य अर्थ पर निर्भर करता है शब्द पर नहीं। इसलिए शब्द-विशेष को हटाकर उसका पर्याय रख देने पर भी काव्य-सौंदर्य बना रहता है।

उभयालंकार वहाँ होता है जहाँ अलंकार का चमत्कार शब्द और अर्थ दोनों पर आधारित है। काव्य में 'अर्थालंकारों' की संख्या सबसे अधिक निर्धारित की गई है। शब्दालंकार बहुत कम हैं और उभयालंकार तो मुख्यतः एक ही है - 'पुनरुक्तवदाभास अलंकार'। शब्दालंकार - वक्रोक्ति, अनुप्रास, यमक, श्लेष, चित्र

अर्थालंकार - उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, मानवीकरण

Scanned with CamScanner